

卷之四

[The manuscript page contains several lines of handwritten Devanagari script, which are heavily obscured by significant staining and discoloration.]

मन्त्रानि विनाशाय ह्रीं ह्रीं अथ यत्कुरु ॥ वयसि
हृन्नामाय नमः ॥ गच्छय नमः ॥ यद्यनव ॥ वि
द्युम्न नमः ॥ अथ नमः ॥ विद्याय ॥ अथ नमः ॥
सुखमाय नमः ॥ अथ नमः ॥ वर्य ॥ मह्यदे निर्मित्य
मन्त्रानि ॥ अथ नमः ॥ ॥ यथा ॥ याम ॥ ॥ ॥
२४ ॥ १३ ॥ ॥ मन्त्रिका ॥ याम ॥ अथ नमः ॥ लल्लनय ॥

अथ नमः ॥ सुखदत्त ॥ अथ नमः ॥ दक्षिण नमः ॥ ॐ नमः
मन्त्रानि ॥ याम नमः ॥ अथ नमः ॥ दक्षिण नमः ॥ ॐ नमः ॥
याम नमः ॥ अथ नमः ॥ दक्षिण नमः ॥ ॐ नमः ॥
याम नमः ॥ अथ नमः ॥ दक्षिण नमः ॥ ॐ नमः ॥
याम नमः ॥ अथ नमः ॥ दक्षिण नमः ॥ ॐ नमः ॥
याम नमः ॥ अथ नमः ॥ दक्षिण नमः ॥ ॐ नमः ॥
याम नमः ॥ अथ नमः ॥ दक्षिण नमः ॥ ॐ नमः ॥

[illegible][illegible]

[illegible]

ॐ श्रीग्याद ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ मध्या ग्रीयाद ॥ ॐ नै ॐ व
 द्म बन्ध ग्रीयाद ॥ ॐ मं ॐ ललाटा हृदयान्न ग्री
 याद ॥ ॐ स्वां ॐ मस्तु कात्यादान्न ग्रीयाद ॥ ॐ हां
 ॐ यादान्नस्तु कान्न ग्रीयाद ॥ ॐ तिथा उगीन्याः
 सः ॥ ॥ अथ अस्मन्नासः ॥ ॐ को कयालवि
 र्ण्यं पुर्ण्यश्वाहा ॥ वामहस्ता ॥ य ॥ ॐ आं याः

लनममपगुन कदशवाहा ॥ मणिवन्ध ॥ रुं कौ
जं कलान कदशवाहा ॥ कृपय ॥ रुं रुं मृगवात
नमारुयशवाहा ॥ कन्ध ॥ रुं रुं विगुलन घाठ
यशवाहा ॥ दकुरुसाय ॥ रुं रुं वदण गाठयश
वाहा ॥ मणिवन्ध ॥ रुं रुं मूमवण चूर्णयशवा
हा ॥ कृपय ॥ रुं रुं खद्वान नयापान रुनशवा

५३

हा ॥ कृपय ॥ रुं रुं निजसुन्यास ॥ ॥ अथर्गः
खम्भयन ॥ विकाण वल वल यय वाया वयूजा
याय ॥ रुं रुं अन्नकथनम ॥ मी विसल ॥ अ
रुजसुय रुठ ॥ मी वियूजा ॥ रुं रुं वं अग्निमधु
लायनम ॥ अरुजसुय रुठ ॥ रुं रुं सलावसु
यनयाय ॥ रुं रुं वयूजा ॥ रुं रुं मृयमधुलायनम

॥ शालीखनधन ॥ ॐ ह्रीं क्लीं ॥ गङ्गावयमन
वेव ॥ गातावलीसबसुगा ॥ नमोदासिधकावरी
जलसिन्धुनिधीकन ॥ ॐ ह्रीं संसाममधुलायन
महा ॥ ॐ ह्रीं वक्तादवीक्षा ॥ मत्स्यमूढामसू
लमकुजयवयव ॥ यज्जयूजा ॥ ज्वावाकनादि
धनमूढा ॥ ॐ ह्रीं धमकुनयूजासामग्रीकाय ॥

ॐ गिर्नीखयूजा ॥ ॥ अथसामानार्थयागमुय
न ॥ शिकालमधुलवठवयवायावयूजायाय ॥
ॐ नमः ॥ धर्मचिन्ता ॥ मक्षियूजा ॥ ॐ ह्रीं ज्वा
मधुलायनमहा ॥ काकावणयाजयवयवावमीदि
सन ॥ ॥ धयूजा ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं मधुलायनमहा ॥ ॐ
कावयवयावयागसलीखनधन ॥ ॥ धयूजायाय ॥

ॐ क्रीं क्रीं क्रीं अन्ननयूजय ॥ रुं कानन के सा
 गिका गवाय ॥ धयूजा ॥ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं
 ॥ अवाहनादि ॥ ध्वनयानिमन्त्रा ॥ ध्व
 म् ॥ लीखनयूजा धमसादिनसलनां द्वाय वृ
 ॥ ॐ कालवागिविद्वाह कालसंकर्षणी धा
 माह ॥ नना कालाय वादया ॥ ॐ निसामान्ययो

[illegible]

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मूलयागयूजा ॥ ॥ गुनगर्भलयाय ॥ ॐ ह्रीं श्री
कृष्णनाथाय नमः ॥ ॐ ह्रीं दूर्वासनाथाय नमः ॥ ॐ
ह्रीं वामदेवीनाथाय नमः ॥ ॐ ह्रीं वशिष्ठ
नाथाय नमः ॥ ॐ ह्रीं अन्धकनाथाय नमः ॥ ॐ ह्रीं
दशकुन्धनाथाय नमः ॥ ॐ ह्रीं मीननाथाय नमः
॥ ॐ ह्रीं हयग्रीवनाथाय नमः ॥ ॐ ह्रीं स्रग्व

स्थानम॥ ॐ ललाटत्रयमालिख्य ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ह्रीं श्रीं श्रीं विष्णवे ॥ ॐ चन्द्रनमः ॥ ॐ सिद्धन
मः ॥ ॐ अक्षयनमः ॥ ॐ भाद्रपदमः ॥ ॐ य
थानमः ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ चन्द्रमणियनमः ॥ धृति
धवनिप्रसयूजा ॥ ॥ द्वात्रयूजाचक्र ॥ ॐ ह्रीं
ॐ मधुलायविष्णुजाधायय ॥ ॐ ॐ कालाक्षदा

वयालक्ष्मीयाद ॥ ॐ ॐ कालरात्रिद्वात्रयालक्ष्मी
याद ॥ ॐ ॐ मृत्युधजाद्वात्रयालक्ष्मीयाद ॥ ॐ ॐ
वातधजाद्वात्रयालक्ष्मीयाद ॥ ॐ ॐ कीकालद्वात्र
यालक्ष्मीयाद ॥ ॐ ॐ मरुगद्वात्रयालक्ष्मीयाद ॥
ॐ ॐ मरुगनन्दद्वात्रयालक्ष्मीयाद ॥ ॐ ॐ चण्ड
वद्वात्रयालक्ष्मीयाद ॥ ॐ ॐ निद्वात्रयूजा ॥ ॥

दद्यासनयुजा॥ ॐ हूं कृतयुर्गदिवसुमास्तु॥ सना
यनम॥ ॐ हूं सत्यदादिवसुर्वेदायनम॥ ॐ हूं
ब्रह्मादिदण्डिद्युगिमुस्तु॥ सनायनम॥ ॐ हूं ले
वदयतासनायनम॥ ॐ हूं वविप्रयुतासनाय
नम॥ ॐ हूं वं नूदयतासनायनम॥ ॐ हूं यं ॐ
ध्वजयतासनायनम॥ ॐ हूं हूं सदाशिवयतास

नायनम॥ ॐ हूं मरुतेववयतासनायनम॥ ॐ
ॐ हूं श्री हूं हूं मरुतिवासनायनम॥ संधूषा॥
अथ ध्यान॥ ॐ हूं जगिगुह्यमरुताकाली दण्डिका
पिलाचना॥ ह्रस्ववर्जुमिरुतागता॥ असुवाद्रुतनूद
नी॥ नानावर्णमस्वादवी सूर्यारुवात्मिकासि
तु॥ वाधुवर्मायनिधानी॥ राजारुचवर्णविना॥ जि

विरुज्जुकावयापलागत्वकमिद्धाद्यावादि
सर्वेन्द्रियानि नू देवागच्छ सर्वे विनीतिवृत्त
दा ॥ मूलनगिया अलि ॥ ३ ॥ गय्येय ॥ १ ॥ ॐ नमः ॥
ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥

यूयं नमः ॥ मूलनगिया अलि ॥ ३ ॥ ॐ नमः ॥
कनालीकां कुं कुं नमः ॥ १ ॥ ॐ नमः ॥
नताय किमया यूजा ॥ न्यास ॥ १ ॥ किमिश्विका
कपुंयक ॥ १ ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
रुगवतीकां ऊं नमः ॥ १ ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
नीयानिमः ॥ १ ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥

धात्रज्ज्वात्राम्खि ज्नामिकास्थानम॥ ॐ ॐ
कनिष्ठास्थानम॥ ॐ किपिश्विच्चकचनलष्ट्या
स्थानम॥ ॐ गिकचन्यास॥ ॥ नमारुगवर्णाद
कमालायेकांददयायनम॥ ॐ कृद्विकायेक
लदीयायकागिबसत्वादा॥ ॐ ॐ ॐ वव्ववगिख
ॐ गिखायेवोवट्॥ धात्रज्ज्वात्राम्खि ज्नामिकास्थानम॥

दुव्यायैकववायदु॥ ॐ ॐ मरुनाविकाय
ॐ नगगयायववट्॥ ॐ किपिश्विच्चकादुधुयिद
ज्नायारुदु॥ ॐ गिज्ज्नायस॥ ॥ यदासना
य३॥ गवासनाय३॥ वृवासनाय३॥ सिंहासनाय
३॥ ॐ ॐ ॐ गार्देकास्थिखवर्णुवृवद्विगमन
रुनवानन्दवृयददु ॐ ॐ मरुसंयवशुज्ज्नाय

वर्मकृणीवर्मनीश्वरी। त्वामखद्वान्मूलधनरुलक
नयागुरुमयागदीरुसंगनुवाद्यवनजूरुय
यर्मयागुर्माकुवेनाथ॥ मयातामानुषा। राजवक
सुमनिरादातिमीकुडिदवी। वकेकेणिनिनर्गवन
जूरुययर्मरुववानन्दनाकि। सयूष्टादवदवीः
अकूलकूलयर्मचाविर्ममूलवीजं नोमिसर्वार्थदा

नीयवयुवमथर्नयागुर्माकुडिदवी॥ ॐ नमो
यूर्यनमः॥ ॥ गियाअलि॥ नंदोप्रादिकुंक्षु
दुर्माजानन्दनाकिरुववानन्दवीवाधियतयशु
दुर्मायक्तिमात्रायनवात्मानन्दनाथ। वाकि
दुर्माकामायादकायुज्यामिनमः॥ मूलनवतनु
॥ दयजगयुज्याददयाय३॥ ॐ नमो३॥

दुर्लियाये ३॥ किंकवचाय ३॥ किं नग्नयाय ३॥
 दुःखाय ३॥ अवारुनादि ॥ यानिमूर्ता ॥
 अधानकां धधानकां धावधानरुनदुःखं सर्वतः
 सर्वसर्वदुःखं सर्वदुःखं नदुःखं दुःखं दूकां ॥ बलि
 नंददुःखिनीदुःखं लाकाकवनीकां कामादुःखं
 नीकां कामादुःखं रुकाविनीनैसां सः प्रीयादुःखं

॥ वलि ॥ नमो रुगवता भुं कृद्वि कारये जां जां दू धा
न जया न जया नाम्नि विष्ठां च किपि रवि च
यादू का ॥ वलि ॥ स्वाक मरुत वलि ॥ दां देण या ला
य वलि गृह २ स्वारु ॥ वां वद कना था य वलि गृह २
स्वारु ॥ गां गण यति ना था य वलि गृह २ स्वारु ॥
यां या गि नी स्था वलि गृह २ स्वारु ॥ भूं वाम धुंध

नीवलि गृह २ स्वाहा ॥ ह्रीं नमो कवची नमो नानाधि
यतयवलि गृह २ स्वाहा ॥ सर्वस्य ४ नमो ४ सर्वस्य ४
यिसावस्य ४ सर्वस्य ४ ॐ हृदय नमो स्वावलि गृह २ स्वा
हा ॥ ॥ ॐ गिकुडिकावने ॥ ॥ अथ उग्रचण्डा
पूजनं ॥ न्यासः ॥ मृत्युं कुरु नमो मृत्युं कुरु ॥ ४ ॥ क
वसाधन ॥ ॐ ह्रीं नमो कवची नमो नमो ४ ॥ ॐ

उग्रचण्डा पूजनं ॥ न्यासः ॥ मृत्युं कुरु नमो मृत्युं कुरु ॥ ४ ॥ क
वसाधन ॥ ॐ ह्रीं नमो कवची नमो नमो ४ ॥ ॐ
॥ ॐ गिकुडिकावने ॥ ॥ अथ उग्रचण्डा
पूजनं ॥ न्यासः ॥ मृत्युं कुरु नमो मृत्युं कुरु ॥ ४ ॥ क
वसाधन ॥ ॐ ह्रीं नमो कवची नमो नमो ४ ॥ ॐ

ॐ ॥ त्वीमांशं स ॥ नग्नया यवयट् ॥ मृत्युं रुचं अ
सुयं रुट् ॥ ॐ तिर्जं गन्या स ॥ ॥ आधार गक
थनम ॥ अनकासनाय २ ॥ कन्दसनाय २ ॥ ना
वासनाय २ ॥ यणसनाय २ ॥ कणवासनाय २ ॥ क
र्णिकासनाय २ ॥ यद्वासनाय २ ॥ सिंहासनाय २ ॥
महिषासनाय २ ॥ सूरासनाय २ ॥ निर्धुकासना

य २ ॥ ॥ ध्यान ॥ गक वा मि क वा व धु नाना यू ध्या
य ॥ गोरिगा ॥ दिवा व सु य वि धाना दिवा ली का व
रू धिगा ॥ कि वा ठि क लु ला का व ॥ क यू च म निः
नी य वा ॥ व ल मा ला वि वि ण्ण हा उ मा ला व ली वि
नी ॥ अ ह्मा द न रु जा का ना यी न व द रु चू च रु
॥ स र्वी ली का व र्म य का ग ठि का ठि स म य रा ॥ ॥

खड्गसचनगथावर्क वर्क कृष्णधवागुरु। वचर्द
उमचूरुस। धूलयागसू। नारिना॥ दद्वि। धन
कवानता यथा। नारुगनथागुरु। रुगवर्कधनु
रुसुच। गदाद्यधु। नारिना॥ या। नवगर्क
नीरुस। खद्वान्। कृष्णयौगर्क। विनम। दानथा
सिद्धि। सिंहासनायविष्णुना॥ अधिभु। वागिनः

नमो वासावर्तन युष्मादिदावचुष्टय ॥ इयदा नका
यवजयययिगीहृदं रुट्वाहा ॥ इयमानकाय ॥
विद्यानकाय ॥ इनवानकाय ॥ ॥ इयमानकाय ॥
दद्यामस्तु कं कनकायुजय ॥ इयमानकाय ॥
यययिगीहृदं रुट्वाहा ॥ ॥ इयमानकाय ॥
युष्ट यूनद्वामस्तु ॥ ॥ इयमानकाय ॥

उवयमगुलंदावा यथेष्टु समस्तु नगविहिवलि
दयारुचिमाधाय यणनिधाय ॥ तद्वामाना ॥
गुष्टारुचिमाधाय ॥ इयमानकाय ॥
यममायनीनवलि ॥ इयमानकाय ॥
निं कच ॥ यवविद्यामाधाय ॥ इयमानकाय ॥
जगद्वामानयकाय ॥ इयमानकाय ॥

त्वावरुस्यमालया निगदनायां गुनामानमनवासा
 रुसगतिवाविंतिवा विंतिवा नृनं जयेत् ॥ एवं यथा
 गतिजया जयादिकं कसममादाये ॥ ॐ गुम्फातिगुम्फ
 गीकुर्वं गुम्फाणां सात्कृतं जयं ॥ सिद्धिं रव्युमदवि
 त्वत्युसादात्मरुध्वि ॥ ॐ तिदद्यावासा रुसुजयं स
 मर्थं गत्वा दत्तं विराद्या ॥ नमः ॐ नमः ॥ ॐ नमः

श्रीमन्नीलसच चत्वे ॥ मातर्नीलसच चत्वे नित्यं मर्मा
 श्रीराग्यं सम्यग्युद येत्यालीटयदस्ति नं वदद्दि
 सावाननरिशिरु ॥ रूपांदाववलावन निनयनं कर्तु
 कयालात्यं स्वप्नश्रुदधनीत्वमवगवणीत्वामीश्व
 वीमाश्रय ॥ ॐ त्यादि रिरुत्वा स्नाज्ञयातियं मया ॥
 नामामदीयं यवदवनाथं समर्थं गत्वा दित्यात्मस

मय्यर्पित्वा यानि मूर्खान्यदर्थे ॥ आचारुनं न जाना
मि न जानामि वि सङ्गं न । पूजासंगि न जानामि त्वं
गतिं यत्र मध्वनी ॥ ॐ नित्यं त्वा सदा विचरं ददा
गविलाया सदा वम दया यत्र तज्जहद्वदि समान
य ॥ यथा ॥ गच्छ गच्छ यत्र सुनं त्वसुनं यत्र मध्वनि ।
यत्र वक्ता दया ददा न विदन्ति यत्र यद ॥ ॐ नित्यं ॥

निष्ठुदवियत्र सुनं सुसुनं यत्र मध्वनि । यत्र वक्ता
दयः सदा सदा सिद्धिनिमद्वदि ॥ ॐ नित्यं ॥ गगनं
नायामं यत्र गदि कृत्वा न गाल्यां निर्माल्यावा
सिनीं पूजय ॥ न निर्माल्यावा सिन्यनमः ॥ ३ ॥
ॐ नित्यं ॥ गगनं गिद्ध्या दत्वा सिद्धिं कल्याय
थं सुखं विरुचय ॥ ॐ नित्यं ॥ ॥ ॐ नित्यं ॥

लसवच्चर्यानि र्याचनविधिसमायं ॥ ७ ॥

ॐ नमः श्रीसिद्धिलक्ष्मीदेव्यै नमः ॥ यथमुगुच नमः ॥
ॐ नमः श्रीगुचयादूकल्याणाय नमः ॥ अथ रुक्मीयादोमुख्ययुक्त
ल्या ॥ यथाज्ञान ॥ अथ मनःकृत्वा ॥ ॥ गताद्यावयुजनी ॥
दं दुरुक्तो नमः ॥ दं द्यावप्रिये नमः ॥ वंवाद्याधियगये वृत्ता

त्या नमः ॥ ॐ निद्यावयुजा ॥ ॥ अथ असनयुजा ॥ ॐ ऊँ श्री
आधानगकिमलासनाय नमः ॥ ॥ गतारुगष्टुद्धि ॥ ॥
अथ सत्यं नुय रूगाय रूगाय विमस्तिना ॥ यरूगाविधिक्
रुर्वी ननस्य नुगिवाक्या ॥ ॐ ऊँ श्रीसकलसक्यमथनी अ
मुयरूद्र ॥ यथा दनमादाय दिसावलाकनी कृत्वा वाम
यादन गालय र्थनिविद्या ॥ विष्णुमूर्च्छादनी ॥ स्वद्वानमालि

स्वा॥ वलि यागस्तु यथ॥ निगलनावम्य॥ अस्मन्नजलयाग
यूजा॥ ॐ ह्रीं श्रीं सकलशंखमधनी अस्तु यरुट् ॥ ॥ अथ
सामान्यास॥ ॐ ह्रीं श्रीं हृदयाय नमः॥ ३ गि वसंत्वारु॥ ३ सि
स्वाये वोषट्॥ ३ कवचाय हूं॥ ३ नगुयाय वषट्॥ ३ अस्तु
यरुट्॥ ॐ नितुमन ऊं गुग्गादिकवचास॥ गतायो गोयामा
चवकं वद्विचूयासि अग्निना हृदयाय रुक्मिणी॥ सामवृ
थासि यूचक॥ अमृतमयसवी रंध्राय ७॥ कुरु कानि ववृ
थासि दवी दौ दवी वा त्वचूयात्मानं ध्यात्वा विचिन्ता॥ गद्गुरु

शुद्धिरुव०॥ ॥ अस्तु यथा कर्णरुमो॥ चतुर्वयमधुली नि
कापी मालिका॥ रुपिमूद्रयामकार्ययागस्तु यथ॥ यथ
मरुतं नयूजनी॥ ॐ नमः नमः॥ सर्वसिद्धि नमः॥ था गि नि
रु०॥ सर्वसिद्धि०॥ मातृकस्था०॥ नभानि त्यादिगानन्द०॥
नन्दिगाये०॥ सकलकुलवक्त्र०॥ नायिकाये०॥ रुगव
मिवशु०॥ कायालिन्ये०॥ गयथा०॥ ॥ द्वितीयश्वरु
नयागयूचर्ण॥ नवाक्षत्रीमूलमनु ययूजनी॥ तृतीयश्वरु
ठन अक्षदनी॥ नवाक्षमनु ग अलादनी॥ ॐ ह्रीं श्रीं ६

सलेरुलेससस४ श्री ज्ञानन्दरु ववायवोषट् ॥ यश्च वलवी
जनयुजन ॥ लूं लूं लूं लूं लूं ॥ यागमूखावलाकनी ॥ ३ सस४ स
यवायवी जमृ नं प्रव २ यावय २ सकृ गायविमावनाय
स्वाहा ॥ वीजमूडीयदर्णय ॥ अर्थादिकनगिकागमा
लिख्ये ॥ गिकागम (ध्वं) कावीलिख्ये ॥ गिकागमना
कवमृथे ॥ अ १३ ॥ ३ सकलसकृ यमथनी जमृ यरुट्
॥ गनमकुणयूयादिदवासाधयामियाद्वर्ण ॥ अर्धयणाद
कनविन्दुयनमुखसाधनी ॥ समस्तमूलमकुणयूयाज

लिदया ॥ मरुक ॥ युद्धमूडीयदर्णय ॥ र्वं मरुमूडीय
दर्णय ॥ गता अर्धयाग वृयदीयादगतनयुजय ॥ गता
नास ॥ र्वं यवमरुसनी द्वादयायनम४ ॥ र्वं निर्वानमा
र्जदवीगिबसस्वाहा ॥ र्वं विषमायप्रवयसमनीसिवाय
वोषट् ॥ र्वं सकलद्विगाविष्टकृणदलनीकववायद्वं ॥
र्वं सर्वोयदाभूधिरवणी नगृयायवयट् ॥ र्वं सकलग
कृयमथनी जमृ यरुट् ॥ र्वं गिकागमनकवीगन्यास ॥ ॥
३ नम४ सर्वसिद्धियागिनीश्या पूर्ववकायनम४ ॥ ३ नम४ स

वैसिद्धिमाहकथा दक्षिणवक्त्राय २ ॥ ३ नमानिथादिता नन्द
नन्दिनायेडुरुचवक्त्राय २ ॥ ३ सकलकूलचक्रनायिकाथेय
शिमवक्त्राय २ ॥ ३ रुगवतीचक्रिकायालिनीदुर्धवक्त्राय २ ॥
म. रुवा ॥ द्य. द्यय ॥ धा. नाको ॥ रुं. मुख ॥ दा. वामनासायूट ॥
दू. दक्षनासायूट ॥ दा. वामनय ॥ रुं. दक्षनय ॥ दा. वामक
रुं ॥ दा. दक्षकरुं ॥ नं. लिङ्ग ॥ मं. मुद्रा ॥ नवद्वान्यास ॥ ॥
सुगोत्रीनदवीनूर्यविचित्रा ॥ यूनन्यास ॥ रुं. यवमहीसिनीस
वैरुदयनाथयादूका ॥ रुं. निर्वाणमा ॥ नदवीविचित्रा

नाथयादूका ॥ रुं. विषमाययवयसमनिजूनानिवाधगिखा
म्यायादूका ॥ रुं. सकलद्विगानिष्टकणदलनीत्वगलकव
चनाथयादूका ॥ रुं. सद्यमिदोराधिमवगीजूलयगकिन
थनकणयाययादूका ॥ रुं. सकलसुखयमथनीनित्यजूरु
नाथयादूका ॥ रुं. निषण्णन्यास ॥ रुं. दा. दक्षविजूरुगच्छ ॥
ननाजूरुधन्यास ॥ रुस २ रुसिनाविचित्रा ॥ वल्ग २ कवृणा
सूक्तिविचित्रा ॥ नचवृधिवानवसारुदनि. कयालविचित्रा
॥ वाम ॥ ममसगु. मर्द २ खादि २ खदामविचित्रा ॥ दक्ष ॥

जिहूलनरुदि २ जिहूलविचित्रा ॥ वाम ॥ कुन्द २ स्व ॥ पुनावा २
 न्या ॥ दक्ष ॥ नाउये २ याणां विचित्रा ॥ वाम ॥ कुदय २ ऊर्कूर्गवि
 चित्रा ॥ दक्ष ॥ नावयात्तममसकलमनावर्था साधय २ अरुयरु
 र्गविचित्रा ॥ वाम ॥ यचमकाननिक वचदरु र्गविचित्रा ॥ दक्ष
 ॥ रुगवनिमरु र्गवचयधाविपीमूर्धु विचित्रा ॥ वाम ॥ शिदणव
 चनमितसकलमनुमान यर्धु विचित्रा ॥ दक्ष ॥ वृत्तिकवायूध
 न्यास ॥ ॥ यणगजनवत्तलगुक्कयगासेन विचित्रा ॥ दक्षीमरु
 कालिकालनासिनी कूठुलनी ॥ निस्रवृय विचित्रा मूलाधाः

वधात्वा ॥ न्यास ॥ दू. आधाव ॥ दू. ददय ॥ दू. रुमध ॥ दाला
 वृय विचित्रा ॥ यसीदमदनागुर्वाकृव २ सूवासूवकन्यकारिता
 कवसी विचित्रा ॥ दू. आधाव ॥ ग्रीयुक्क ॥ कालि ॥ दू. नारो ॥
 रुट् ददय ॥ रुट् क ॥ रुट् मुख ॥ स्वा रुमध ॥ रुवक्कव
 ॥ वृत्तिकमेधुमोशनवर्क न्यास ॥ ॥ गता आत्मयूजा ॥ मूल
 धावा कूठुलिनी मूलायावक्कवर्धनीत्वा सरुसदलसंयुक्क ॥
 वन्दनाक्रमधूयदायादि ॥ नवाकवी मूलमकुणयूषा अलिद
 शान् ॥ ॥ गतागुवृयकि यूजा स्वगिबसि ॥ दू. दू. ग्रीयुक्क

नमः॥ ३यवमगुवृक्षानमः॥ ३यवाख्यवगुवृक्षानमः॥ ३यव
मगुवृक्षानमः॥ ३अदिसिद्धिगुवृक्षानमः॥ ३गुवृयाद
कायुज्यामिनमः॥ तनामालिनीय १००॥ ॥यश्चवलि॥
ॐ कौं ग्रीं कौं कौं कौं ४ स्वस्ति नमः कयालस्ववल्गुसहिताग्रीय
दूकस्थानमः॥ चन्दनाक्षत ॥ वल्गुसहितायनमविद्युनास
यश्ममसकलमनायार्थासाधय २ ॐ मां अलियिसितडादन
पूजायथानाकि वलिगुद्र २ दूकट्टाका ॥ गऊं न्याहुष्ठया
० अ॥ अथ का॥ ० वल्गुवलि ॥ ॥ ३ गां ग्रीं गुं गौं ४ गलयनि

नाथवल्गुसहितायग्रीयादूकस्थानमः॥ चन्दनाक्षत ॥ यूव
कनवलि ॥ मध्यामाहुष्ठवायवाक्का॥ ० गलयनिवलि ॥
३ वां वां वूं वां वूं ४ वदूकनाथवल्गुसहिताग्रीयादूकस्थानमः॥
चन्दनाक्षत ॥ यूवकनवलि ॥ अनामिकाहुष्ठयागननेअथ
का॥ ० वदूकवलि ॥ ॥ ३ सां सां सूं सां सूं ४ सर्वथागिनिस्थासर्व
विश्ववासिन्ध्यासर्वरुगयनिनीस्थासर्वस्मृगानाधियगयस्था
ग्रीयादूकस्थानमः॥ चन्दनादियूजा ॥ यूवकनवलि ॥ कनिष्ठा
गुष्ठयागन ० ग्रीगानका॥ ० थागिनीवलि ॥ ॥ मध्या ॥ ३ ॥

[illegible]

छुलं ॥ यस्याद्गममादाय मूलनवाङ्कचिमलुजयित्वा वामनासं
 यूटमाग्नेन निगृह्य वाक्कृत्स्नूर्यधात्वा चक्रमध्यास्थाय यत् ॥
 ध्यानं ॥ जंजुं मरुतकामयी लङ्का नस्मिकाद्ययूतयरा यश्च
 कादगन्तुजा प्रियश्च नयनरुगा ॥ श्वेतवर्धुमहादवीमहाद्य
 गायविस्मिता ॥ मागवाष्टकमध्यागु सिद्धिधागिनि यूजिता ॥ रु
 चिता स्यालं लिहाना कालत्यूष्टं कर्मजगत् ॥ उत्थासा कृत्वा सथाग
 न्वालयत्कलयत्तान् ॥ क्वचिन्मद्विषत् क्वचित्कृत्यत् क्वचित्
 रुचन्मवलान् ॥ क्वचित्पृथग् क्वचित्प्रात्यग् स्वर्गं कायवर्तत् ॥

गोसारुवनेर्युका। डव। गन्धविह्विता। यार्गीकृशधवाध
वीववदारुययाणिनी ॥ सवारुसुधर्मस्वर्गनेलावुकारुका
यक। वामस्वर्गागमत्युग्रदक्षि। नगूलमूलम ॥ जूयचक्रन्यव
चोदं दगजासवधुविर्ग। सवारुसुधर्मस्वर्गनेलावुकारुका
यक ॥ वामसुकलर्गादिर्वा। मरुतत्त्वयदीयकम् ॥ नवायत्य
गिवादवी। उन्नन्नाधामदरुगा ॥ नकासानकरुदन विष्ट
व्यायव्यवस्तिगा। यत्यगिनामरुदवी सिद्धिलक्ष्मीजयय

दा॥ ॐ निधान ॥ अवाहनस्तुयनसन्निधानसन्निवर्गान्नि
धनकवचायदू। अवगुणन ॥ अस्तुयरुदयादुगुठागुनी
॥ वास्तुस्वर्गयिनीध्यात्वा ॥ यावयगिष्टा ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं कां य
वैलं वं गं वं सें हं लं दं सां हं हं स ॥ सिद्धिलक्ष्मीयागा ॐ रुया
गा सिद्धिलक्ष्मीजाव ॐ रुक्मिणकोटो ॐ श्रीं ॐ ह्रीं ॐ सिद्धिलक्ष्मी
सास्वरुमनावु द्विचिह्नमूलकावया। नवायत्युग्रदक्षि
यागादिसर्वद्विधानि ॐ रुवागच्छ सुखधिनिष्ठुनुत्वारु
निययावयगिष्टा ॥ ॥ नवाकवीमूलमकुं नवाउरुलि ॥

ललावतः ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ललावतः ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ललावतः ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ललावतः ॥ ४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ललावतः ॥ ५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ललावतः ॥ ६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ललावतः ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ललावतः ॥ ८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ललावतः ॥ ९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ललावतः ॥ १० ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

न्यनादि ॥ १ ॥ पूर्वोक्त नवलि ॥ ३८० ॥ अथ यथायथं नमि
धाय यत्कीर्तयेत् नमस्तस्मै ॥ ३८१ ॥ अथ यथायथं नमि
मः ॥ चन्दनादियुजा ॥ पूर्वोक्त नवलि ॥ ३८२ ॥ अथ यथायथं नमि
यीकन्दुकी वा नारुवा नदी ॥ ३८३ ॥ अथ यथायथं नमि
मः ॥ चन्दनादियुजा ॥ पूर्वोक्त नवलि ॥ ३८४ ॥ अथ यथायथं नमि
किलिनि लाजकी मारुन्दापी वायवा नदी ॥ ३८५ ॥ अथ यथायथं नमि
या ॥ चन्दनादि ॥ पूर्वोक्त नवलि ॥ ३८६ ॥ अथ यथायथं नमि
व ॥ चन्दनादि ॥ पूर्वोक्त नवलि ॥ ३८७ ॥ अथ यथायथं नमि

यनरुचयुग्रीयादूकस्थानम॥ चन्दनादि॥ पूर्विकनवलि॥ ३
 गयंसैरुलैकदवीवा॥ ज्ञायासीषनीकायटीमहालक्ष्मीः
 ०००॥ गानीर्जुर्द्वंसिहावरुनवग्रीयादूकस्थानम॥ चन्दनादि
 ॥ पूर्विकनवलि॥ ज्ञावाकनादित्वस्रमू॥ यद्म॥ जिगूल॥ जिः
 सिखा॥ गुह्य॥ काल॥ दक्ष॥ काश्रु॥ विन्दु॥ ०००॥ निजुस्रमू॥
 ॥ ॥ गनादादलदल॥ पूर्विकानेदावस्य॥ खूं॥ गिवादवीर्जु
 वायादूका॥ यूज्यामिनर्य्यामिनम॥ खूं॥ रुगवनीर्जुवाया
 दूका॥ १०॥ खूं॥ रुदादवीर्जुवायादूका॥ १०॥ खूं॥ मायादवीर्जु

वायादूका॥ १०॥ खूं॥ किनिकिनिदवीर्जुवायादूका॥ १०॥ खूं॥
 विमलादवीर्जुवायादूका॥ १०॥ खूं॥ यमजिहादवीर्जुवायादू
 का॥ १०॥ खूं॥ त्वदवयुदवीर्जुवायादूका॥ १०॥ खूं॥ घंटादवीद
 वीर्जुवायादूका॥ १०॥ खूं॥ वावमानवीदवीर्जुवायादूका॥ १०॥
 खूं॥ किनिकिनिदवीर्जुवायादूका॥ १०॥ खूं॥ काकिनीदवीर्जुवा
 यादूका॥ १०॥ पूर्विकानेदावस्य॥ द्वादलदलमि॥ १
 गनावद्द॥ लयगुकिनी॥ खूं॥ जंजकिनीनम॥ धनवलि॥ खूं॥
 नांवाकिनीनम॥ वलि॥ खूं॥ लांलाकिनीनम॥ वलि॥ खूं॥ का

तजनवत्सलद्वीप... नाथुर्वाङ्गीकृत... गायत्रीनवलि... ॥ यश्च वलि... ॥

[illegible]

श्रीवलि गुरु २६ ३३ ३३ ३३ ॥ सिद्धिलक्ष्मीवलि ॥  ॥
कुंजमीडुगनात्राय ॥ धावन्मय महा नादस्यस
फकय्यकव रुकायाय वद विगाहिमां गवक्षगता
। सुवासुन त्रितदया हृष्टमना गुधमिवि। सिद्धा
नायूजित दयाविगाहिमां x ॥ सच्चरुगमय दया
यश्च दया मधमिवी। सिद्धनायूजित दयावि
मां x ॥ कवालसूचि नमोभयालह नय वि ॥ ३३

गाव नमानित्यं गाहिमां x ॥ ऊठा दूटं तमायूक
लसजिक्ता गदा लित। रुगवद्विकन दयावि
मां x ॥ मां मावूय कौट दूय च दूय नमोभु
नाकि वयं नमोभुय गाहिमां x ॥ ऊठा नमोभुय
गोहं रुकिनं कुरुतं गव। धावन्मय। वलं दहि
मं दहि गाहिमां x ॥ स्नानं दानं तथमय वलिदो
नं गम्य कर्म। यस्मानं वरुलसाग गाहिमां x ॥



ASMA ARCHIVES

२६६७

Ms. B. 1.6

ASHA ARCHIVES

८६६०१

卷之四